श्रीहनुमानचालीसा

सद्गुरुनाथ महाराज की जय!

आवाहन

श्रीगुरु के चरण-कमलों की रज से अपने मन रूपी दर्पण को स्वच्छ कर,
मैं जीवन के चार फलों को प्रदान करने वाले रघुश्रेष्ठ, भगवान श्रीराम
के निर्मल यश का वर्णन करता हूँ।

यह जानकर कि मुझमें बुद्धि की कमी है,
हे पवनकुमार मैं आपका स्मरण करता हूँ।
कृपया मुझे बल, बुद्धि, विद्या प्रदान करें
और समस्त क्लेश व विकारों को हर लें।

चौपाई १

ज्ञान व गुणों के सागर, श्रीहनुमान की जय!
तीनों लोकों में प्रसिद्ध, कपीश्वर अर्थात् वानरों के स्वामी की जय!

चौपाई २

श्रीराम के दूत, अतुलित बल के धाम,
आप अंजनीपुत्र और पवन के पुत्र के नाम से जाने जाते हैं।

चौपाई ३

आप महावीर हैं, मूर्तिमान पराक्रम हैं जिनका शरीर वज्र के समान है।
आप कुमति [नकारात्मक विचारों] का निवारण करते हैं
और सुमति [सकारात्मक विचारों] के संगी हैं।

चौपाई ४

आपका वर्ण स्वर्ण जैसा है और आपका वेश सुन्दर है;
आपके कानों में कुण्डल हैं व आपके केश घुँघराले हैं।

चौपाई ५

आपके हाथ में वज्र-गदा और ध्वजा विराजित है;
आपके कन्धे पर मूँज नामक तृण से बना पवित्र जनेऊ सुशोभित है।

चौपाई ६

शिव जी के पुत्र और केसरीनन्दन,
आपके तेज का कीर्तिगान सारे जग में किया जाता है।

चौपाई ७

अत्यधिक बुद्धिमान, गुणी, अत्यन्त चतुर,
आप सदैव श्रीराम का कार्य करने को आतुर रहते हैं।

चौपाई ८

प्रभु का चरित्र सुनने में आपको आनन्दरस प्राप्त होता है;
भगवान श्रीराम, सीता और लक्ष्मण आपके हृदय में बसते हैं।

चौपाई ९

आप सूक्ष्म रूप धारण कर सीता जी के समक्ष प्रकट हुए;
विकराल रूप धारण कर आपने लंका को जला डाला।

चौपाई १०

डरावना रूप धारण कर आपने असुरों का संहार किया
और भगवान श्रीराम के आदेश का पालन किया।

चौपाई ११

संजीवनी बूटी लाकर आपने लक्ष्मण जी को पुनः जीवन दिया
जिससे हर्षित होकर श्रीरघुवीर ने आपको हृदय से लगा लिया।

चौपाई १२

श्रीरघुपति ने आपकी बहुत प्रशंसा की :
"तुम मुझे वैसे ही प्रिय हो जैसे मुझे अपना भाई, भरत प्रिय है।"

चौपाई १३

"सहस्त्रों मुख तुम्हारा यशगान करें!" ऐसा कहकर
श्रीपति ने आपको गले से लगा लिया।

चौपाई १४

सनक आदि मुनि; ब्रह्मा जी और अन्य देवता;
ऋषिराज नारद; देवी सरस्वती और शेषनाग जी . . .

चौपाई १५

. . . यमराज; कुबेर; दिग्पाल [दिशाओं के रक्षक];
कविजन और विद्वान—कोई भी आपका वर्णन नहीं कर सकता!

चौपाई १६

वस्तुतः, आपने सुग्रीव पर बड़ा उपकार किया कि उसे भगवान श्रीराम से मिला दिया,
जिन्होंने सुग्रीव को उसका राज्य वापस दिलवा दिया।

चौपाई १७

सारा संसार जानता है कि
विभीषण जी ने आपकी सलाह मानी
और वे लंकेश्वर अर्थात् लंका के स्वामी बन गए।

चौपाई १८

सूर्य सहस्त्र योजन पर स्थित है,
फिर भी आपने उसे मधुर फल समझकर निगल लिया।

चौपाई १९

प्रभु की अँगूठी मुख में रखकर
आप समुद्र को लाँघ गए—क्या यह अचरज की बात नहीं?

चौपाई २०

इस जगत में जितने भी कठिन कार्य हैं,
वे आपकी कृपा से सुगम हो जाते हैं।

चौपाई २१

आप भगवान श्रीराम के द्वार के रखवाले हैं,
जिसमें आपकी आज्ञा के बिना किसी को भी प्रवेश नहीं मिलता।

चौपाई २२

आपकी शरण में आने से सभी सुखों की प्राप्ति होती है;
जब आप रक्षक हों तो किससे डरना?

चौपाई २३

आपके तेज को आपके सिवाय कोई नहीं सँभाल सकता;
आपकी गर्जना से तीनों लोक काँप जाते हैं।

चौपाई २४

हे महावीर, जब भी आपका नाम पुकारा जाता है
तो भूत-पिशाच निकट नहीं आते।

चौपाई २५

हे वीर हनुमान! जो आपके नाम का निरन्तर जप करते हैं,
उनके समस्त रोगों का आप नाश करते हैं और उनकी सारी पीड़ा हर लेते हैं।

चौपाई २६

हे हनुमान, जो मन, वचन और कर्म से आपका ध्यान करते हैं,
उन्हें आप सब संकटों से मुक्त कर देते हैं।

चौपाई २७

तपस्वी राजा, भगवान श्रीराम सब पर राज करते हैं।
उनके समस्त कार्य आप कुशलता से सम्पन्न करते हैं।

चौपाई २८

और कोई मनोकामना लेकर जो भी आपके पास आता है,
उसे अमित जीवन का फल प्राप्त होता है।

चौपाई २९

आपका प्रताप चारों युगों में फैला हुआ है
और आपकी कीर्ति सारे जगत में जगमगा रही है।

चौपाई ३०

आप साधु-सन्तों की रक्षा करने वाले, असुरों का संहार करने वाले
व भगवान श्रीराम के दुलारे हैं।

चौपाई ३१

आप आठ सिद्धियों और नौ निधियों को प्रदान करने वाले हैं,
क्योंकि यह वरदान आपको माता जानकी अर्थात् देवी सीता ने दिया था।

चौपाई ३२

आपके पास भगवान श्रीराम का अमृत है
और आप अनन्तकाल तक श्रीरघुपति के दास हैं।

चौपाई ३३

आपका भजन करने से भगवान श्रीराम प्राप्त होते हैं
तथा जन्म-जन्म के दुःखों का विस्मरण हो जाता है।

चौपाई ३४

ऐसा व्यक्ति मृत्यु के समय भगवान श्रीरघुनाथ के धाम को जाता है
अथवा, यदि वह पुनः जन्म लेता है तो हरिभक्त कहलाता है।

चौपाई ३५

हे साधक, अपने चित्त में अन्य किसी देवता को मत धारण करो।
हे हनुमान, आपकी सेवा करने से समस्त सुखों की प्राप्ति होती है!

चौपाई ३६

हे बलवीर हनुमान! जो भी आपका स्मरण करता है
उसके सभी संकट कट जाते हैं और उसकी सभी पीड़ाएँ मिट जाती हैं।

चौपाई ३७

श्रीहनुमान की जय हो, जय हो, जय हो!
आप हम पर वैसे ही कृपा करें जैसे श्रीगुरुदेव करते हैं।

चौपाई ३८

जो भी इसका [श्रीहनुमानचालीसा का] पाठ सौ बार करता है,
वह समस्त बन्धनों से मुक्त हो जाता है और उसे परमानन्द प्राप्त होता है।

चौपाई ३९

श्रीगौरीपति, शिव जी साक्षी हैं
कि जो इस श्रीहनुमानचालीसा का पाठ करता है,
उसे परम प्राप्ति होती है।

चौपाई ४०

श्रीहरि के नित्य सेवक तुलसीदास कहते हैं :
“हे नाथ, आप मेरे हृदय में अपना निवास बना लीजिए।”

मंगलाचरण

हे संकटमोचन, मंगलमूर्ति, पवन-पुत्र!
आप देवराज श्रीराम, देवी सीता व श्रीलक्ष्मण सहित
मेरे हृदय में निवास कीजिए।

सद्गुरुनाथ महाराज की जय!

गुरुदेव सिद्धपीठ, भारत में रिकॉर्ड किया गया।
अंग्रेज़ी भाषान्तर © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन® २०१६, २०२०। सर्वाधिकार सुरक्षित।
कृपया इसे कॉपी न करें, रिकॉर्ड न करें और न ही इसे वितरित करें।

श्रीहनुमानचालीसा

मधुलिका खण्डेलवाल द्वारा लिखित परिचय

‘श्रीहनुमानचालीसा’ भगवान राम के महान भक्त हनुमान जी का स्तुतिगान है। पूजनीय सन्त-कवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने १६वीं शताब्दी में इसकी रचना की। ‘चालीस’ शब्द से अभिप्राय संख्या चालीस से है क्योंकि इस काव्य में चालीस चौपाइयाँ हैं। यह स्तोत्र स्थानीय भाषा, अवधी में है जो कि प्राचीनकालीन हिन्दी का रूप है।

इन चौपाइयों में तुलसीदास जी भगवान राम की सेवा में तत्पर हनुमान जी की अनन्य भक्ति व दृढ़संकल्प की जय-जयकार करते हैं। उदाहरण के लिए, बत्तीसवीं चौपाई में सन्त-कवि, हनुमान जी का गुणगान करते हुए कहते हैं कि भगवान राम के प्रति एकनिष्ठ भक्ति के कारण हनुमान जी के पास “राम रसायन” यानी भगवान रामनाम का अमृत है, रामनाम जप की सुधा है। हनुमान जी के अनुकरणीय गुणों का आवाहन करके तुलसीदास जी स्वयं अपने सच्चे भक्ति-भाव का परिचय देते हैं।

श्रीहनुमानचालीसा सम्पूर्ण भारत के व विश्व के अन्य भागों के लोगों का प्रिय स्तोत्र है। बहुत-से लोगों को यह कण्ठस्थ होता है और वे इसका पाठ कर अपने दिन की शुरुआत करते हैं; और कण्ठस्थ होने के कारण वे बड़े हर्ष से इसे गा पाते हैं! अपनी भक्ति के साथ-साथ हनुमान जी कठिन कार्यों को पूर्ण करने के अपने अदम्य बल व साहस के लिए प्रसिद्ध हैं। ऐसा कहा जाता है कि श्रीहनुमानचालीसा का पाठ, कठिनाइयों को दूर करने और चुनौतिपूर्ण परिस्थितियों में आत्मबल को बढ़ाने में पाठ करने वाले की सहायता करता है क्योंकि पाठ करने वाला इस स्तुति द्वारा अपने हृदय में श्रीहनुमान जी के गुणों का आवाहन कर रहा होता है।

©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।